मुख्य परीक्षा

प्रश्न--"सत्यनिष्ठा" सिविल सेवकों हेतु "एक अति आवश्यक किन्तु दुर्लभ चारित्रिक गुण है।" व्याख्या कीजिए।

(250 शब्द)

"Intergrity is an essential but rare quality of civil servents" Discuss.

(250 Words)

मॉडल उत्तर

- सत्यनिष्ठा से तात्पर्य:- 50 (शब्द)
- सत्यनिष्ठा सिविल सेवकों के लिए आवश्यक क्यों? (100 शब्द)
  1. ईमानदार हेतु।
  2. भौतिकता से अप्रभावित होने हेतु।
  3. सरकारी धन का सदुपयोग हेतु।
  4. संकीर्ण मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति से परे होने हेतु।
  5. हित संघर्ष की परिस्थिति के समाधान हेतु।
- **सत्यनिष्ठा दुलर्भ चारित्रिक गुण कैसे? (100 शब्द)**
  - सिद्धांत व व्यवहार में अंतर।
  - सत्यनिष्ठा के मापदण्ड:- कठिन व चुनौतीपूर्ण।
  - समर्पण और विचारों के प्रति अडिग एक कठिन कार्य।
- सत्यनिष्ठा वह सद्गुण है, जिसमें व्यक्ति अपने विचार, अभिव्यक्ति व आचरण को अभिन्न रूपों में स्थापित करता है अर्थात् जब विचार, अभिव्यक्ति व आचरण एक बन जाते हैं, तो सत्यनिष्ठा अभिव्यक्त होती है। इसलिए सत्यनिष्ठा को नैतिक अखण्डता भी कहते हैं।

  सत्यनिष्ठा सिविल सेवकों हेतु एक अतिआवश्यक गुण है, जिसे निम्नलिखित तरीके से अभिव्यक्त किया जा सकता है:-

  1. सत्यनिष्ठा से व्यक्ति ईमानदार होता है और ईमानदारी के ऊपर अब तक लिखे सभी लक्षण उसमें विद्यमान होते हैं।
  2. सत्यनिष्ठ सिविल सेवक अपने पद या प्रभाव की मद्द से कोई अवांछित भौतिक लाभ प्राप्त नहीं करना चाहता।
  3. वह अपने पद अथवा अवस्था की अभिव्यक्ति संकीर्ण मनोवैज्ञानिक सुख या अहम तुष्टि के लिए नहीं करता।
  4. वह सरकारी धन/ संसाधन का खर्च उन्हीं सावधानियों के साथ करता है, जो सावधानियाँ वह अपने निजी धन/संसाधन का प्रयोग करते समय बरतता है।
  5. सत्यनिष्ठ व्यक्ति उसके निर्णयों पर प्रश्न/विवाद नहीं चाहता अत: वह हित संघर्ष की परिस्थिति का समाधान करना चाहता है।

  उल्लेखनीय है कि उपरोक्त सभी बातें सिविल सेवकों के लिए अति आवश्यक होने के साथ-साथ एक दुलर्भ चारित्रिक गुण हैं क्योंकि हम सभी जानते हैं कि:-
- सिद्धांत, वक्तव्य व आचरण में अखण्डता सामान्य बात नहीं होती है। सत्यनिष्ठा के मापदण्ड कठिन और चुनौतीपूर्ण होते हैं और सत्यनिष्ठ बने रहने हेतु उन मापदण्डों पर अड़े रहना आवश्यक होता है। जैसे ही सिद्धांत व व्यवहार में अंतर दिखने लगता है, व्यक्ति सत्यनिष्ठा से विचलित मान लिया जाता है। अत: व्यवहार में सिद्धांतों के प्रति समर्पण और उससे समझौता न करने की प्रवृत्ति आवश्यक हो जाती है अर्थात् अंतत: सत्यनिष्ठ वही लोग होते हैं, जो अपने विचारों के प्रति अडिग हों तथा कठिनाईयों व चुनौतियों का सामना करते हुए भी अपने आचरण से उन सिद्धांतों की अवमानना न होने दें, जिससे सत्यनिष्ठा प्रभावित होती हो अत: हम कह सकते हैं, कि सत्यनिष्ठा अतिआवश्यक किन्तु दुलर्भ चारित्रिक गुण है।